Volume : 3 | Issue : 10 | October 2014 • ISSN No 2277 - 8179

Research Paper

Pramanvrutti
प्रमाणवृत्ति

Philosophy

KEYWORDS :

Dr. Diptiben Punjabhai Parmar

Philosophy Department, Gujarat University, Ahmedabad

– प्रमाणवृत्ति

प्रतीयतेड्नेन इति प्रमाणम् अर्थात् जिस वृत्ति से यथार्थ ज्ञान उत्पन्न होता हो उसे प्रमाण कहते है । वाचस्पति मिश्र के अनुसार जिसके द्वारा यथार्थ ज्ञान हो वही प्रमाण है । प्रमाण ही प्रमा का मुख्य साधन है । सामान्य भाषा में भी सत्य ज्ञान को प्रमाण द्वारा प्रस्तुत करना पड़ता है । प्रमाण के तीन प्रकार है:-

१. प्रत्यक्ष २ अनुमान ३ आगम

१. प्रत्यक्ष प्रमाण:

किसी विषय का इन्द्रिय के साथ संयोग होने से जो साक्षात् ज्ञान होता है वह प्रत्यक्ष कहलाता है । प्रत्यक्ष- प्रति + अक्ष - इन्द्रियों के सम्मुख । प्रत्यक्ष ज्ञान का अनुभव इन्द्रियो द्वारा होता है । आँख से देखना, नाक से सूंघना, त्वचा से स्पर्श इत्यादि ज्ञान इन्द्रियों द्वारा प्रत्यक्ष रूप से प्राप्त होता है, जिसका विश्लेषण और संश्लेषण मन करता है । इन्द्रिय विषयदेश तक नहीं जाती अपितु बुद्धि इन्द्रिय की सहायता से विषयदेश तक जाकर विषयाकर रूप मे परिणत होकर विषय का प्रकाशन करती है । यह ज्ञान इन्द्रियों की सहायता से होने वाला विषयाकार रूप में परिणनित बुद्ध का धर्म है । प्रत्यक्ष ज्ञान में चित्त तथा उस ज्ञानेन्द्रिय की आवश्यकता होती है, जिसके विषय का ज्ञान होना ही प्रत्यक्ष ज्ञान को ज्यादा सत्य तथा अनुभूत माना जाता है, क्योंकि उसका अनुभव चित्त द्वारा इन्द्रियों की सहायता से किया होता है जैसे गर्म और ठण्डे का अनुभव ।

२. अनुमान :

अनुमान का अर्थ है – पीछा करना, अनुसरण करना अनु – के आधार से + मान-नाप) किसी अन्य के आधार से नापना या जानना या लिंग ज्ञान से जो कृति उत्पन्न होती है वह अनुमान है । कह सकते है किसी प्रत्यक्ष दर्शन के सहारे युक्तियों द्वारा अप्रत्यक्ष पदार्थ के स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करना अनुमान वृत्ति है । जैसे नदी में आई बाढ़ को देख कर दूर देश मे अनिष्ट होने का ज्ञान । पहाड़ पर धुआँ देखकर उसकी जड़ में अग्नि का ज्ञान होना अनुमान वृत्ति है । अनुमान हम उसी ज्ञान का कर सकते है जिसका अनुभव या प्रत्यक्ष हम भूतकाल में कर चुके है । जैसे अग्नि और धुएँ को देखकर अग्नि का ज्ञान हो सकता है अन्यथा नहीं । अत: अनुमान का मूल प्रत्यक्ष ही है ।

३. आगम :

जिस विषय का ज्ञान प्रत्यक्ष और अनुमान द्वारा नहीं होता उसका ज्ञान आप्त वचन के द्वारा हो जाता है । आप्त पुरूष के वचनरूपी ज्ञान जिसे अन्य दर्शनों में शब्द कहा जाता है । इसका कारण आप्त वचनो द्वारा या लिखे हुए शब्दो द्वारा यह ज्ञान हमारे पास आया है ।

REFERENCE

१. योग दर्शन, डो. रमाकान्त मिश्र, डो. चन्द्रकान्त मिश्र, ६ २. वेदान्त में बौद्ध सन्दर्भ, डो. अनामिका सिंह, डो. सूर्य प्रकाश व्यास ६ ३. बौद्धेतर दर्शनग्रन्थो में बौद्धदर्शन, डो. धर्मचन्द जैन, डो. राजकुमार छाबड़ा, डो. श्वेता जैन ६ ४. ओशो- पतंजलि योग सूत्र के परिचय में । ६ ५. पतंजलि योग दर्शन, हरिहरानन्द आरण्य, मोतीलाल बनारसीदास ६